International Journal of Applied Research 2022; 8(10): 355-358

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(10): 355-358
www.allresearchjournal.com
Received: 28-07-2022
Accepted: 07-09-2022

मो0 फैसल ईसा
शोध छात्र, (एस0आर0एफ0), शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

डा0 सरोज यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
मो0 फैसल ईसा
शोध छात्र, (एस0आर0एफ0), शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में व्यावसायिक अभिरुचि का अध्ययन

मो0 फैसल ईसा और डा0 सरोज यादव

सारांश
अभिरूचि एक आन्तरिक प्रेरक शक्ति है, जो हमें ध्यान देने के लिए किसी वस्तु, व्यक्ति या क्रिया के प्रति प्रेरित करती है। अभिरूचि एक मानसिक संरचना है, जिसके द्वारा व्यक्ति किसी वस्तु से अपना लगाव या सम्बन्ध प्रकट करता है। व्यावसायिक अभिरुचि से तात्पर्य अनेकों व्यवसायों में से व्यक्ति की सन्तुष्टि एवं आकर्षण के फलस्वरूप किसी एक व्यवसाय का चयन करने से है। एक राष्ट्र तभी विकास कर सकता है जब उस राष्ट्र के युवा कुशल हों और उन्हें उनकी कुशलता के अनुरूप रोजगार भी प्राप्त हो। इसी उद्देश्य से कौशल विकास योजना की रूपरेखा तैयार की गयी थी। देश में दक्ष एवं कुशल श्रमशक्ति की कमी को देखते हुए प्रधानमंत्री ने 15 जुलाई, 2015 को पहले विश्व युवा कौशल दिवस के अवसर पर इस कौशल विकास मिशन का उद्घाटन किया। कौशल विकास मिशन के द्वारा भारत में व्याप्त बेरोजगारी को समाप्त कर युवाओं को स्वालम्बी बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

कूटशब्द : कौशल विकास, व्यावसायिक अभिरूचि, विद्यार्थी।

प्रस्तावना
कोई भी समाज अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति शिक्षा के माध्यम से करना चाहता है। आधुनिक भारतीय समाज निर्धनता, बेरोज़गारी, जनसंख्या वृद्धि जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। इन समस्याओं का समाधान भारतीय समाज की प्राथमिकताओं में शामिल है। भारत में शिक्षा का उद्देश्य लोगों की आर्थिक स्थिति एवं उनके जीवन स्तर में निरन्तर विकास कर समाज में सुख–शान्ति स्थापित करना भी है। इस दृष्टिकोण से भी शिक्षा को रोज़गारोन्मुखी बनाना अनिवार्य है। केवल पुरूषों को शिक्षा प्रदान कर देने से समाज का पूर्ण विकास सम्भव नहीं है, स्त्रियों को व्यावसायिक शिक्षा प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाना भी देश के विकास के दृष्टिकोण से अनिवार्य है।

किसी भी राष्ट्र का आर्थिक विकास वहाँ की कुशल एवं योग्य मानव शक्ति पर निर्भर करता है। कुशल एवं योग्य मानव शक्ति के विकास में व्यावसायिक शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वर्तमान तकनीकी एवं औद्योगिकीकरण के युग में सामान्य शिक्षा की अपेक्षा व्यावसायिक शिक्षा अधिक महत्वपूर्ण होती जा रही है। इसलिए माध्यमिक स्तर के बाद विद्यार्थियों का रूझान व्यावसायिक शिक्षा की ओर बढ़ रहा है। फलस्वरूप विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में छात्रों की संख्या लगातार बढोत्तरी हो रही है। कोई भी छात्र किसी भी व्यावसायिक पाठ्यक्रम में सफलता प्राप्त कर पायेगा इसकी उम्मीद कम ही होती है। मनोविज्ञान के क्षेत्र में हुए शोधकार्य ने यह सिद्ध कर दिया है कि कोई भी दो व्यक्ति समान क्षमता, रूचि, बौद्धिक स्तर के नहीं होते हैं। उनमें वैयक्तिक भिन्नता पाई जाती हैं तथा किसी क्षेत्र विशेष में सफलता उसकी अभिरूचि, क्षमता, योग्यता, बौद्धिक स्तर एवं अन्य योग्यता पर निर्भर करती है। वर्तमान सरकार ने कौशल विकास को प्राथमिकता देते हुए देश में एक अलग कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय की स्थापना की है। साथ ही साथ प्रधानमंत्री ने सन् 2015 में कौशल विकास योजना भी शुरू की है। योजना समिति की रिपोर्ट के अनुसार इस योजना के अन्तर्गत 2.5 करोड़ युवाओं को प्रशिक्षित किया जा चुका है। राष्ट्र के ज्यादा से ज्यादा युवाओं को प्रशिक्षित कर उन्हें रोजगाार परक बनाने एवं विकास के नये क्षेत्र ढूंढना और उन्हें विकसित करना कौशल विकास के मुख्य उद्देश्य हैं। इसके अन्य उद्देश्य निम्न है। 1-आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थी जो उचित शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ हैं, उनके अर्न्तनिहित कौशलों की पहचान करना। 2-अधिक से अधिक युवाओं के कौशलों को पहचान कर उन्हें उनकी अभिरूचि, अभिक्षमता तथा योग्यता के अनुसार रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना।3-युवाओं को कौशल प्रशिक्षण प्राप्त कर रोजगाार योग्य बनाने और अपनी जीविका सुनिश्चित करने में सक्षम बनाना एवं प्रोत्साहित करना।

4-भारतीय बेरेजगार युवकों एवं युवतियों को रोजगार परक बनाकर राष्ट्र की प्रगति में सम्मिलित करना। 5-युवाओं को व्यावसायिक शिक्षा के साथ–साथ कम्प्यूटर आधारित शिक्षा प्रदान करना।

अभिरुचि शब्द को अंग्रेजी भाषा में Interest कहा जाता है। Interest शब्द लैटिन भाषा से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'जो हमारे लिए महत्व रखे'। अतः अभिरुचि से तात्पर्य "व्यक्ति की उस मानसिक व्यवस्था के निर्माण से है जिसके द्वारा वह किसी वस्तु से अपना सम्बन्ध समझाता है या उसे महत्वपूर्ण समझता है।" ड्रेवर के अनुसार "अभिरुचि मनुष्य की प्रवृत्तियों का गत्यात्मक रूप है।" साधारण अर्थ में अभिरुचि एक ऐसी विशिष्ट योग्यता है जो मनुष्य को विशिष्ट क्षेत्र में वांछित स्तर की निपुणता प्राप्त करने में सहायता प्रदान करती है। व्यावसायिक अभिरुचि से तात्पर्य अनेकों व्यवसायों में से व्यक्ति की सन्तुष्टि एवं आकर्षण के फलस्वरूप किसी एक व्यवसाय का चयन करने से है। इस वर्ग में वे सभी अभिरुचियां आती हैं जिनका सम्बन्ध विभिन्न व्यवसायों से होता है तथा यह बताने में समर्थ होती हैं कि कौन किस कार्य या किसी व्यवसाय विशेष में (आवश्यक प्रशिक्षण आदि दिये जाने पर) सफल हो सकेगा। इस प्रकार की अभिरुचियां उदाहरण के तौर पर निम्न हो सकती हैं 1-लिपिक कार्य अभिरुचि, 2-वकालत कार्य सम्बन्धी अभिरुचि, 3-शिक्षण अभिरुचि, 4-अभियंत्रिकी अभिरुचि, 5-संगीतक अभिरुचि, 6-कलात्मक अभिरुचि । कुमार (2017) ने माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरुचियों की उनके लिंग के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि लड़कियों की व्यावसायिक अभिरुचि साहित्यिक, वाणिज्यिक, रचनात्मक, कलात्मक, सामाजिक और घरेलू क्षेत्रों में लड़कों की तुलना में अधिक थी। जबकि वैज्ञानिक, कार्यकारी, कृषि और प्रेरक क्षेत्रों में लड़कों की व्यावसायिक अभिरुचि लड़कियों की तुलना में अधिक थी। सिंह (2018) ने बकरवाल और पहाड़ी स्कूल के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरूचि उनके लिंग के सम्बन्ध में आकलन किया। कई क्षेत्रों में महिलाओं का मध्यमान पुरूषों के मध्यमान से अधिक था। महिलाओं व्यावसायिक अभिरूचि शिक्षण क्षेत्र, कृषि, और संगीत में अधिक थी। साहित्यिक, शारीरिक, वाह्य, कम्पनी, खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यकरिणी और वैज्ञानिक पहलू की स्थिति में पुरूषों की व्यावसायिक अभिरूचि महिलाओं की तुलना में अधिक थी। तकनीकी विकास के फलस्वरूप आज प्रशिक्षण संस्थाएं नये–नये व्यावसायिक पाठ्यक्रम प्रारम्भ कर रहे हैं। विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण संस्थायें खोली जा रही हैं। इसी क्रम में तकनीकी युग की आवश्यकता समझते हुए 15 जुलाई 2015 को प्रधानमन्त्री जी ने कौशल विकास योजना का शुभारम्भ किया था। इसके पश्चात् सभी प्रदेशों के जिला स्तरों, ब्लाक स्तरों पर कौशल विकास मिशन संस्थान खोले गये। इसलिए शोधकर्ता द्वारा कौशल विकास मिशन संस्थानों की वर्तमान समय में उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध पत्र में इन संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षणार्थियों की व्यावसायिक अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नांकित है:

- कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले ग्रामीण एवं शहरी छात्रों मे व्यावसायिक अभिरूचि की तुलना करना।
- कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाली ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं में व्यावसायिक अभिरूचि की तुलना करना।
- कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले ग्रामीण छात्रों एवं ग्रामीण छात्राओं में व्यावसायिक अभिरूचि की तुलना करना।
- कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले शहरी छात्रों एवं शहरी छात्राओं में व्यावसायिक अभिरूचि तुलना करना।

शोध परिकल्पनाएँ

- कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के मध्य व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर है।
- कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाली ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के मध्य व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर है।
- कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले ग्रामीण छात्रों एवं ग्रामीण छात्राओं के मध्य व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर है।
- कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले शहरी छात्रों एवं शहरी छात्राओं के मध्य व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर है।

शोध अध्ययन विधि: प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

जनसंख्या एवं प्रतिदर्श: प्रस्तुत अध्ययन में प्रयागराज जनपद के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में संचालित कौशल विकास मिशन संस्थान में अध्ययनरत विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है। प्रतिदर्श का चयन साधारण स्तरीयकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि से प्रयागराज जनपद के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में संचालित कौशल विकास मिशन संस्थान में अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं में से 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण: प्रस्तुत अध्ययन में कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में व्यावसायिक अभिरुचि के मापन हेतु शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित व्यावसायिक अभिरुचि मापनी का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

उद्देश्य 1: कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में व्यावसायिक अभिरूचि की तुलना करना।

शून्य परिकल्पना 1: कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के मध्य व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 1: ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में व्यावसायिक अभिरूचि की तुलनात्मक स्थिति

क्रम संख्या	समूह	सम्पूर्ण संख्या (N)	मध्यमान	मानक विचलन	टी–अनुपात	मुक्तांश (df)
1	ग्रामीण छात्र	30	148.22	13.53	2.77''	58
2	शहरी छात्र	30	152.99	11.28		

**0-01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

तालिका संख्या 1 के अवलोकन से यह प्रदर्शित होता है कि कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की व्यावसायिक अभिरूचि पर टी-अनुपात का मान 2.77 प्राप्त हुआ है, जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के मध्य व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत होती है। इसलिए निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के मध्य व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर है। व्यावसायिक अभिरूचि पर शहरी छात्रों का मध्यमान (152.99), ग्रामीण छात्रों के मध्यमान (148.22) से अधिक है। अतः कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले शहरी छात्रों में ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा उच्च व्यावसायिक अभिरूचि है।

उद्देश्य 2: कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाली ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं में व्यावसायिक अभिरूचि की तुलना करना।

शून्य परिकल्पना 2: कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के मध्य व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 2: ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं में व्यावसायिक अभिरूचि की तुलनात्मक स्थिति

क्रम संख्या	समूह	सम्पूर्ण संख्या (N)	मध्यमान	मनक विचलन	टी-अनुपात	मुक्तांश (df)
1	ग्रामीण छात्राएं	30	143.41	7.54	8.52''	58
2	शहरी छात्राएं	30	158.31	16.24		

**0-01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

तालिका संख्या 2 के अवलोकन से यह प्रदर्शित होता है कि कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाली ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं की व्यावसायिक अभिरूचि पर टी अनुपात का मान 8.52 प्राप्त हुआ है, जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाली ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के मध्य व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत होती है। इसलिए निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाली ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के मध्य व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर है। व्यावसायिक अभिरूचि पर शहरी छात्राओं का मध्यमान (158-31), ग्रामीण छात्राओं के मध्यमान (143.41) से अधिक है। अतः कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाली शहरी छात्राओं में ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा उच्च व्यावसायिक अभिरूचि है।

उद्देश्य 3: कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले ग्रामीण छात्रों एवं ग्रामीण छात्राओं में व्यावसायिक अभिरूचि की तुलना करना।

शून्य परिकल्पना 3: कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले ग्रामीण छात्रों एवं ग्रामीण छात्राओं के मध्य व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 3: ग्रामीण छात्रों एवं ग्रामीण छात्राओं में व्यावसायिक अभिरूचि की तुलनात्मक स्थिति

क्रम संख्या	समूह	सम्पूर्ण संख्या (N)	मध्यमान	मानक विचलन	टी– अनुपात	मुक्तांश (df)
1	ग्रामीण छात्र	30	148.22	13.53	3.18''	58
2	ग्रामीण छात्राएं	30	143.41	7.54		

**0-01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

तालिका संख्या 3 के अवलोकन से यह प्रदर्शित होता है कि कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले ग्रामीण छात्रों एवं ग्रामीण छात्राओं की व्यावसायिक अभिरूचि पर टी-अनुपात का मान 3.18 प्राप्त हुआ है, जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले ग्रामीण छात्रों एवं ग्रामीण छात्राओं के मध्य व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत होती है। इसलिए निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले ग्रामीण छात्रों एवं ग्रामीण छात्राओं के मध्य व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर है। व्यावसायिक अभिरूचि पर ग्रामीण छात्रों का मध्यमान (148.22), ग्रामीण छात्राओं के मध्यमान (143.41) से अधिक है। अतः कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले ग्रामीण छात्रों में ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा उच्च व्यावसायिक अभिरूचि है।

उद्देश्य 4: कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले शहरी छात्रों एवं शहरी छात्राओं में व्यावसायिक अभिरूचि तुलना करना।

शून्य परिकल्पना 4: कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले शहरी छात्रों एवं शहरी छात्राओं के मध्य व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या 4: शहरी छात्रों एवं शहरी छात्राओं में व्यावसायिक अभिरूचि की तुलनात्मक स्थिति

क्रम संख्या	समूह	सम्पूर्ण संख्या (N)	मध्यमान	मानक विचलन	टी– अनुपात	मुक्तांश (df)
1	शहरी छात्र	30	152.99	11.28	2.75''	58
2	शहरी छात्राएं	30	158.31	16.24		

**0-01 सार्थकता स्तर पर सार्थक

तालिका संख्या 4 के अवलोकन से यह प्रदर्शित होता है कि कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले शहरी छात्रों एवं शहरी छात्राओं की व्यावसायिक अभिरूचि पर टी-अनुपात का मान 2-75 प्राप्त हुआ है, जो कि 0-01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले शहरी छात्रों एवं शहरी छात्राओं के मध्य व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत होती है। इसलिए निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले शहरी छात्रों एवं शहरी छात्राओं के मध्य व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर है। व्यावसायिक अभिरूचि पर शहरी छात्राओं का मध्यमान (158-31), शहरी छात्रों के मध्यमान (152-99) से अधिक है। अतः कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाली शहरी छात्राओं में छात्रों की अपेक्षा उच्च व्यावसायिक अभिरूचि है।

अध्ययन के निष्कर्ष

1. कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के मध्य व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर है। कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले शहरी छात्रों में ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा उच्च व्यावसायिक अभिरूचि है।
2. कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाली ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के मध्य व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर है। कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाली शहरी छात्राओं में ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा उच्च व्यावसायिक अभिरूचि है।
3. कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले ग्रामीण छात्रों एवं ग्रामीण छात्राओं के मध्य व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर है। कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले ग्रामीण छात्रों में ग्रामीण छात्राओं की अपेक्षा उच्च व्यावसायिक अभिरूचि है।
4. कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाले शहरी छात्रों एवं शहरी छात्राओं के मध्य व्यावसायिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर है। कौशल विकास मिशन के अन्तर्गत अध्ययन करने वाली शहरी छात्राओं में शहरी छात्रों की अपेक्षा उच्च व्यावसायिक अभिरूचि है।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध अध्ययन से यह स्पष्ट है कि विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययन करने हेतु विद्यार्थी का उन व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में व्यावसायिक अभिरूचि होना आवश्यक है। विद्यार्थी जिस व्यावसायिक पाठ्यक्रम में प्रवेश लेना चाहता है उसमें उस व्यावसायिक पाठ्यक्रम के अनुरूप व्यावसायिक अभिरूचि है अथवा नहीं है इसकी जानकारी की जानी चाहिए तत्पश्चात विद्यार्थी में निहित व्यावसायिक अभिरूचि के अनुरूप व्यावसायिक पाठ्यक्रम चयन में उसकी सहायता करनी चाहिए। विद्यार्थियों में व्यावसायिक अभिरूचि किस व्यावसायिक पाठ्यक्रम में इसका ज्ञान विभिन्न व्यावसायिक अभिरूचि परीक्षणों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है एवं उसे उसकी व्यावसायिक अभिरूचि के अनुरूप व्यावसायिक पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने हेतु निर्देशन देना चाहिए। यदि विद्यार्थी अपनी व्यावसायिक अभिरूचि के अनुकूल व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का चयन करेगा तो निश्चय ही वे सफल भविष्य की ओर निरन्तर बढ़ते रहेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुमार, आर0. (2017). ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ वोकेशनल इन्टरेस्ट ऑफ सेकेन्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू देयर जेन्डर, इम्पीरियल जर्नल ऑफ इन्टरडिसीपिलनिरी रिसर्च (IJIR), वॉल्यूम–3, संस्करण–4।
2. मिश्रा, आर0 (2002). विभिन्न पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिक्षमता, व्यावसायिक अभिरूचि एवं उपलब्धि का अध्ययन्, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध, इलाहाबादः इलाहाबाद विश्वविद्यालय।
3. सिंह, एम0.(2018). असेस्मेन्ट ऑफ वोकेशनल इन्टरेस्ट ऑफ पहाड़ी एण्ड बकरवाल स्कूल स्टूडेन्टस इन रिलेशल टू देयर जेण्डर. इण्टरनेशनल जर्नल रीसेन्ट साइन्टिफिक रिसर्च, संस्करण–9, 3(सी0), 24817–24819।
4. सिंह, एस0 (2016). कौशल विकास, दिल्ली : अग्नि प्रकाशन।
5. सिंह, ए0 के0 (2009). मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, दिल्ली : मोतीलाल, बनारसीदास।
6. श्रीवास्तव, पी0 ज्ञा0 (2002). शिक्षा मनोविज्ञान नवीन विचार धाराऐं, नई दिल्ली : कॉनसेप्ट पबलिशिंग कम्पनी।